राजस्थान GK PDF
शानदार नोट्स फ्री डाउनलोड
अभयारण्य के नोट्स
राजस्थान की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु
------Download Now------

सामान्य विज्ञान
वस्तुनिष्ठ प्रश्न
Click Here

भारत GK
प्रश्नोत्तरी नोट्स
सम्पूर्ण PDF
Click Here डाउनलोड

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए

राजस्थान क्लासेज

- विषयवार ई- बुक यहाँ से देखे
- Youtube पर ऑनलाइन क्लासे देखे
- लेटेस्ट पोस्ट (GK क्विज)
- 1000 प्रश्न ई-बुक Download
- राजस्थान GK ई- बुक डाउनलोड
- Computer E- book Download
- Rajasthan Gk Questions
- India Gk Questions
- One Liner Gk Questions

राजस्थान

वन कॉरीडोर के माध्यम से राज्य के प्रमुख अभयारण्य को राष्ट्रीय उद्यानों से जोड़ने की महत्त्वाकांक्षी परियोजना का नाम 'राजीव गाँधी बायोस्फीयर रिजर्व' है।

प्रदेश में राष्ट्रीय उद्यान व वन्य जीव अभयारण्य-I

• राष्ट्रीय मरु उद्यान-यह जैसलमेर व बाड़मेर जिलों में फैला हुआ राजस्थान में क्षेत्रफल (3162.50 किमी.) की दृष्टि से सबसे बड़ा अभयारण्य है। यह ''नाममात्र का राष्ट्रीय उद्यान'' है, वास्तव में इसे अभी तक राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा नहीं दिया गया है। इसमें ''आंकल वुड़ फांसिल्स पार्क'' (जीवाश्म उद्यान / मरुस्थल पार्क) स्थित है, जिसमें राज्य पक्षी 'गोडावण' (माल मोरडी / ग्रेट इंडियन बस्टर्ड / केरियोटिस नाइग्री सेप / सोहन चिड़िया / गुधनमेर), पीवणा (विषैला सर्प), चिंकारा (राज्यपशु), सेवण घास बहुतायत मिलते हैं। (Imp.: शाहगढ़ बल्ज (जैसलमेर) में अफ्रीका चीतों को बढ़ाया जाएगा।)

• केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान/घना पक्षी विहार-यह अभयारण्य भारत के प्रमुख पर्यटक परिपथ ''सुनहरा त्रिकोण'' (दिल्ली, आगरा, जयपुर) एवं राष्ट्रीय राजमार्ग-11 पर ''राजस्थान के पूर्वी सिंहद्वार'' भरतपुर में गंभीर व बाण गंगा नदियों के संगम पर स्थित है। इसका निर्माण किशन सिंह ने स्विट्जरलैण्ड की झीलों के आधार पर करवाया। इसे 1956 में पक्षी अभयारण्य, 26 अगस्त, 1981 में राष्ट्रीय उद्यान (राजस्थान का दूसरा व सबसे छोटा-28.73 वर्ग किमी. राष्ट्रीय उद्यान) तथा 1985 में यूनेस्को द्वारा विश्व प्राकृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया। इसके मध्य में शिव (केवलादेव) का मन्दिर है इसलिए इसका नाम केवलादेव अभयारण्य पड़ा। यह अभयारण्य एशिया की सबसे बड़ी पक्षियों की प्रजनन स्थली है अत: इसे ''पक्षियों का स्वर्ग'' (पक्षी अभयारण्य) कहते हैं। यहाँ 'एन्चा घास' में फँसकर सर्वाधिक पक्षी मरते हैं। यहाँ पर साइबेरीयन सारस व लाल गर्दन वाले दुर्लभ तोते पाये जाते हैं। यहाँ पर हाल ही में राज्य की प्रथम वन्य जीव प्रयोगशाला स्थापित की जा रही है। यह विश्व के 10 शीर्ष अभयारण्यों में शामिल है।

• कैला देवी वन्य जीव अभयारण्य।

• रावली टॉडगढ़ वन्य जीव अभयारण्य-यह अजमेर, पाली व राजसमन्द में फैला हुआ है, जिसका नाम इतिहासकार कर्नल जैम्स टॉड के नाम पर पड़ा।

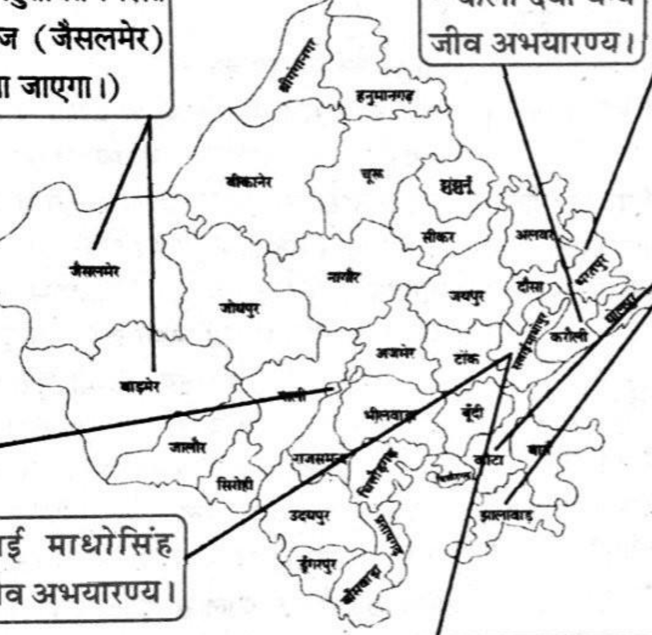

• सवाई माधोसिंह वन्यजीव अभयारण्य।

• दर्रा वन्य जीव अभयारण्य-यह कोटा झालावाड़ में स्थित है। जिसका 2003 में दर्रा अभयारण्य से नाम बदलकर ''राजीव गाँधी नेशनल पार्क'' रखा तथा 2006 में वसुंधरा सरकार ने इसका ''मुकन्दरा हिल्स पार्क'' नाम रखकर राष्ट्रीय उद्यान का स्तर प्रदान करने का प्रस्ताव पारित किया परन्तु इस प्रस्ताव को केन्द्र ने मंजूरी नहीं दी। इस अभयारण्य में गागरोनी/हीरामन तोते/हिन्दुओं का आकाश लोचन (मनुष्य की आवाज में बोलने वाला), अबली मीणी का महल (राजस्थान का दूसरा ताजमहल), गुप्तकालीन हूणों का शिव मन्दिर स्थित है। इसमें सर्वाधिक घड़ियाल व सारस पाये जाते हैं। यह राज्य का तीसरा राष्ट्रीय उद्यान 9 जनवरी, 2012 को तथा 9 अप्रैल, 2013 तीसरा टाइगर प्रोजेक्ट अभयारण्य घोषित किया गया है। दर्रा राष्ट्रीय उद्यान में दर्रा वन्यजीव अभयारण्य, चम्बल वन्यजीव अभयारण्य, जसवंत सागर वन्यजीव अभयारण्य तीन अभयारण्य अवस्थित हैं।

• रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान-यह देश का सबसे छोटा बाघ अभयारण्य है, जिसे ''भारतीय बाघों का घर'' कहते हैं। राज्य में सर्वप्रथम बाघ परियोजना यहीं से शुरू की गई। इसे 1955 में वन्य जीव अभयारण्य, अप्रैल, 1974 में ''टाइगर रिर्जव प्रोजेक्ट'' (देश में 1973 में शुरू हुआ) में शामिल किया गया तथा 1 नवम्बर, 1980 में राज्य का प्रथम राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया। 28 जून, 2008 को देश में प्रथम बाघ विस्थापन (Tiger Transfer) की घटना घटित हुई (बाघ सुल्तान व बाघिन बबली को यहाँ से हैलीकॉप्टर की सहायता से सरिस्का अभयारण्य में छोड़ा गया) यहाँ पर 1960 में एजिलाबेथ, 1985 में राजीव गांधी, 2000 में बिल क्लिंटन तथा 2005 में मनमोहन सिंह घूमने आ चुके हैं। हाल ही में इसके प्रबन्धन हेतु पृथक ''रणथम्भौर बोर्ड'' का गठन किया गया है। इस अभयारण्य में दुर्लभ काला गरुड़ व रेटेड तीतर पाए जाते हैं, तो यह जोगी महल एवं त्रिनेत्र गणेश मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की सबसे बड़ी झील पदम तलओ झील है। • राजस्थान में बाघ परियोजना का जन्मदाता / राजस्थान का टाइगर मैन 'कैलाश साँखला' (जोधपुर निवासी) है। • प्रस्तावित राजीव गाँधी जीवमण्डल रिजर्व का उद्देश्य 'वन्य जीव अभयारण्यों को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान से जोड़ना' है।

• राजस्थान में तीन राष्ट्रीय उद्यान

1. रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान
2. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
3. दर्रा/मुकुन्दरा हिल्स अभयारण्य

• राजस्थान में 26 वन्यजीव अभयारण्य हैं।

• माउण्ट आबू अभयारण्य को अभयारण्यों में से हटा दिया गया है तथा बीसलपुर अभयारण्य को नवीन अभयारण्य घोषित किया गया है।

राजस्थान

वन्य जीवों की संख्या की दृष्टि से भारत में (प्रथम असोम), राजस्थान का दूसरा स्थान है।

प्रदेश में वन्य जीव अभयारण्य-II

• ताल छापर वन्य जीव अभयारण्य-इसका प्राचीन नाम द्रोणपुर (वर्तमान सुजानगढ़) था। यह अभयारण्य काले हिरण व कुंरजा पक्षी (स्थानीय नाम खींचन) की शरण स्थली है। वर्षा ऋतु में यहाँ नरम घास ''मोथिया'' व ''मोचिया साइप्रस रोटेण्डस'' उगती है।

• नाहरगढ़ वन्य जीव अभयारण्य-इसमें भारत का दूसरा ''बायोलोजिकल पार्क'' व देश का तीसरा ''बियर रेस्क्यू सेन्टर'' स्थित है। राजस्थान का एकमात्र ''जैविक पार्क'' है। • जमुवा रामगढ़ वन्य जीव अभयारण्य।

• बंध बारेठा वन्य जीव अभयारण्य-इसे ''परिन्दों का घर'' कहते हैं, जो जरखों के लिए प्रसिद्ध है।

• गजनेर वन्य जीव अभयारण्य-यह अभयारण्य बटबड़ पक्षी जिसे रेत का तीतर / इम्पीरियल सेण्ड ग्राऊज कहते हैं व जंगली सुअर हेतु प्रसिद्ध है।

• धौलपुर वन्य जीव अभयारण्य • केसर बाग वन्य जीव अभयारण्य • रामसागर वन्य जीव अभयारण्य

राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान राज्य वनस्पति और जीवों की विविध प्रजातियों के संरक्षण, परिरक्षण तथा रक्षण के लिए जैव विविधता अधिनियम 2010 पारित किया गया है, तो वन्य जीव सप्ताह 1 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक मनाया जाता है।

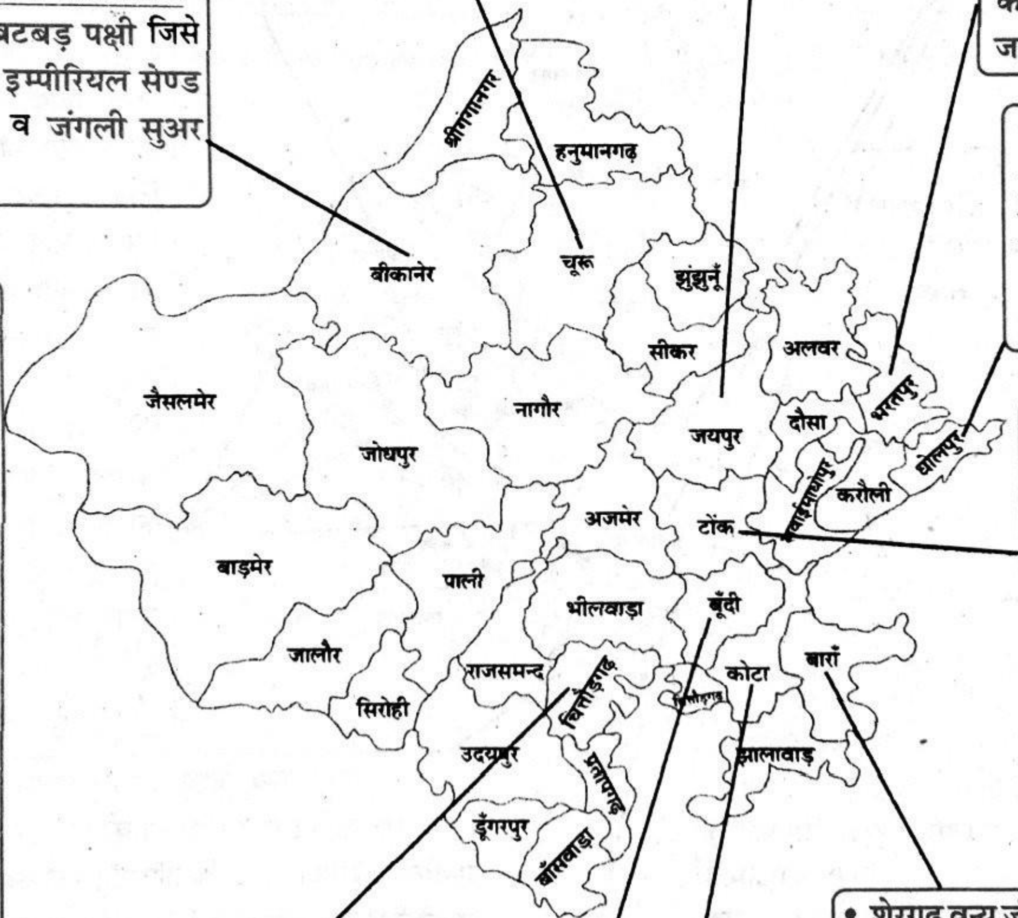

• बीसलपुर वन्य जीव अभयारण्य-यह टोंक की टोडारायसिंह तहसील के राजमहल गाँव में है। राजस्थान का नवीनतम अभयारण्य है। जिसे वसुन्धरा सरकार ने 2006 में अभयारण्य घोषित किया।

• शेरगढ़ वन्य जीव अभयारण्य-इसे सर्पों की शरण स्थली कहते हैं, जहाँ से परवन नदी गुजरती है।

• भैंसरोड़गढ वन्य जीव अभयारण्य-यह रावतभाटा (चित्तौडगढ) में राणाप्रताप सागर बाँध पर स्थित है। इसमें चम्बल व बामनी नदियों का संगम होता है। • बस्सी वन्य जीव अभयारण्य-यह अभयारण्य जंगली बाघों के विचरण हेतु विश्व प्रसिद्ध है। इसमें से ओरई व ब्राह्मणी / वामनी नदी का उद्‌गम होता है।

• जवाहर सागर वन्यजीव अभयारण्य-यह एक जलीय अभयारण्य है, जो उत्तरी भारत का प्रथम सर्प उद्यान है (दूसरा सर्प उद्यान व विष एकत्रित करने की प्रयोगशाला भरतपुर मे हैं) इसमें सर्वाधिक मगरमच्छ पाये जाते हैं। (Imp.: मगरमच्छों को नंगे हाथों में पकड़ने में सिद्ध हस्त रामचरण मीणा को 'देशी स्टीव इरविन' के नाम से जाना जाता है।)

• रामगढ़ विषधारी वन्य जीव अभयारण्य-सांपों हेतु प्रसिद्ध है, इसे 'रणथम्भोर के बाघों का जच्चा घर' कहते हैं।

राजस्थान

राजस्थान के उदयपुर जिले में सर्वाधिक संख्या में वन्य जीव अभयारण्य है।

प्रदेश में वन्य जीव अभयारण्य-III

• **कुम्भलगढ़ वन्य जीव अभयारण्य**-यह अभयारण्य उदयपुर, राजसमन्द और पाली में फैला हुआ है। इसे ''भेड़ियों की प्रजनन स्थली'' कहते हैं। यह राज्य का एकमात्र अभयारण्य है जहाँ से प्रदेश की दो अलग अलग दिशाओं में बहने वाली बनास व साबरमती नदियों का उद्गम होता है। ये नदियाँ अपना जल देश के दो अलग-अलग सागरों में गिराती है। यह जंगली धूसर मुर्गे, चन्दन के वृक्ष, कुम्भलगढ़ दुर्ग, रणकपुर के मन्दिर, परशुराम महादेव का मन्दिर हेतु प्रसिद्ध है।

• **सरिस्का वन्य जीव अभयारण्य**-यह अलवर में स्थित है। यह राज्य का सबसे छोटा अभयारण्य है। राज्य में दूसरी बाघ परियोजना 1978 में यहाँ शुरू हुई। यहाँ पर सर्वाधिक लंगूर, बन्दर, हरे कबूतर पाये जाते हैं, तो यहाँ मयूरों का घनत्व सर्वाधिक है। इसमें पाण्डुपोल हनुमानजी, नीलकण्ठ महादेव, भर्तृहरि, तालवृक्ष, राजोरगढ़ नामक स्थान पर शिव व नौगजा (शांति नाथ जैन मंदिर) आदि दर्शनीय स्थल है। यह अभयारण्य 2005 में बाघ शिकार प्रकरण हेतु चर्चित रहा। स्व. प्रधानमंत्री राजीव गाँधी ने राजस्थान के सरिस्का में कैबिनेट मिटिंग ली थी।

राजस्थान राज्य जैव विविधता बोर्ड द्वारा स्वीकृत सूची में राजस्थान में 40 प्रकार दुलर्भ, लुप्तप्राय तथा संकटग्रस्त वनस्पतियाँ रखी गई है, तो एक दिन में सर्वाधिक पौधे लगाने का गिनीज बुक वर्ल्ड रिकॉर्ड राजस्थान के डूँगरपुर जिले ने बनाया था।

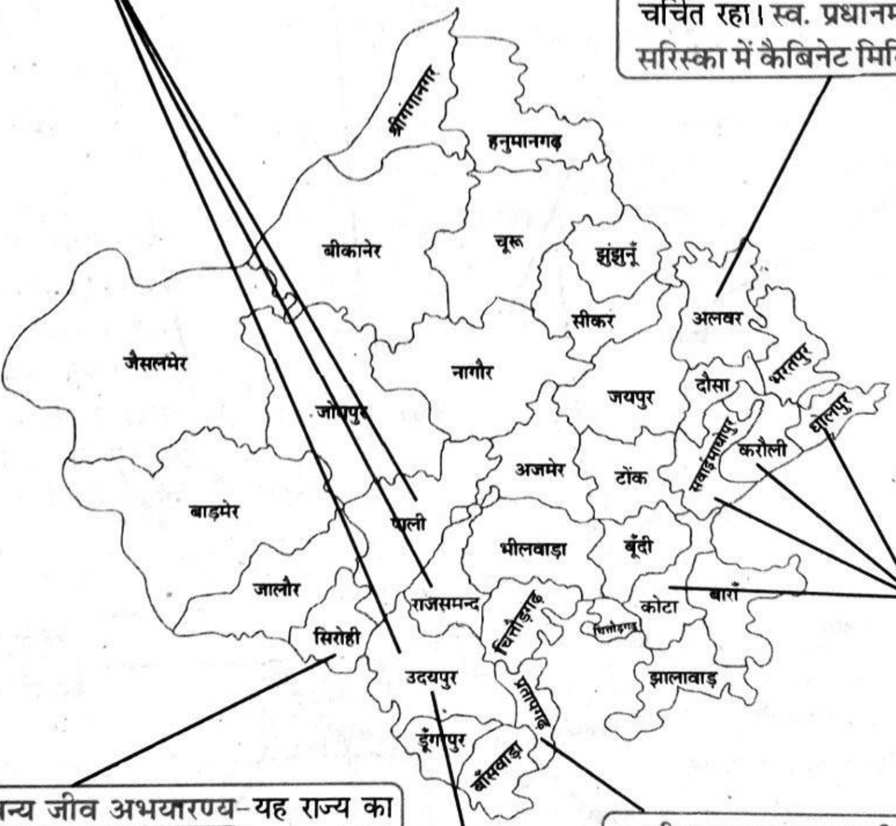

• **राष्ट्रीय चम्बल घड़ियाल वन्य जीव अभयारण्य**-इसे घड़ियालों की प्रजाति को संरक्षित करने के लिए 'घड़ियालों का संसार' के नाम से जाना जाता है। यह राज्य का एकमात्र जलीय अभयारण्य है, जो अन्तर्राज्यीय अभयारण्य राजस्थान, मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश में फैला हुआ है। यह करौली, धौलपुर, सवाई माधोपुर की सीमा पर व कोटा में फैला हुआ है। जहाँ शिशुमार (चपल गंगाई डॉल्फिन), ऊद्बिलाव एवं गांगेय सूंप जैसे स्तनधारी जीव पाए जाते हैं।

• **माउण्ट आबू वन्य जीव अभयारण्य**-यह राज्य का एकमात्र पहाडी पर स्थित अभयारण्य है। जो जंगली मुर्गो, भालुओं, यूब्लेफरिस (सबसे सुंदर छिपकली) एवं डिकिल पटेरा आबू एन्सिस घास (विश्व में एकमात्र यहीं पायी जाती है) हेतु प्रसिद्ध है। वर्तमान में यह अभयारण्य की गिनती में नहीं आता। (**Imp.**: 'ग्रीन मुनिया' नामक चिड़िया आबू पर्वत पर मिलती है)

• **सीता माता वन्य जीव अभयारण्य**-सर्वाधिक जैव विविधता वाले इस अभयारण्य को चीतल / चौसिंगे (यह एन्टीलोप प्रजाति का दुर्लभ जीव है, स्थानीय भाषा में भेंडल कहते हैं।) की शरण स्थली / मातृभूमि व उड़न गिलहरियों का स्वर्ग के नाम से जाना जाता है। सर्वाधिक सागवान के वन (एकमात्र इसी अभयारण्य में), उड़न गिलहरी (साधारणतया महुआ के पेड़ पर रहती है तथा इसे देखने का अच्छा समय सूर्य के छिपने के बाद है। स्थानीय नाम आशोवा है।), वन औषधियाँ (हिमालय के बाद सर्वाधिक), पेंगोलिन (स्थानीय भाषा में आड़ाहुला) मिलते हैं। इसमें सीता माता मन्दिर, लव-कुश नामक दो जल स्त्रोत है। यहाँ से करमोई ''कर्म मोचिनी'' व जाखम नदी का उद्गम होता है। यह अभयारण्य अरावली व विन्ध्याचल पर्वतमाला तथा मालवा के पठार के संगम स्थल पर है।

• **फुलवारी की नाल वन्य जीव अभयारण्य**-इसमें देश का प्रथम ''ह्यूमन एनाटॉमी पार्क'' स्थित है। यही से मान्सी-वाकल नदी का उदगम व सोम नदी प्रवाहित होती है। • **सज्जनगढ वन्य जीव अभयारण्य**- यह नीलगाय व लोमड़ी हेतु प्रसिद्ध है। • **जयसमन्द वन्य जीव अभयारण्य**-इसको ''जलचरों की बस्ती'' के उपनाम से जाना जाता है। इसमें सर्वाधिक बघेरे, बहोरा पक्षी की आश्रय स्थली, छः होदिया व रूठी रानी का महल है।

RAJASTHAN CET
सामान्य हिन्दी
Download Now

सामान्य ज्ञान
5100+ प्रश्न

राजस्थान GK
LIVE CLASS PDF
DAILY UPDATE